4 प्राकृत व्याकरण के प्रमुख नियम

संज्ञा–सर्वनाम
कारक एवं विभक्ति

कारक – किसी क्रिया के सम्पादन में जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है, उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति– क्रिया के सम्पादन में जो सम्बंध दिया जाता है वह विभक्ति है। वे छह हैं–कर्त्ता–प्रथमा, **कर्म**–द्वितीया,करण–तृतीया, संप्रदान–चतुर्थी, अपादान–पंचमी, सम्बन्ध–षष्ठी और अधिकरण–सप्तमी सम्बोधन। कारकों का विभक्तियों से विशेष सम्बन्ध है, क्योंकि विभक्तियों से कारक और संख्या का बोध होता है।

कर्त्ता कारक – जो क्रिया करने में स्वतंत्र होता है और जिसके धातु के व्यापार का आश्रय होता है, उसे कर्त्ता कहते हैं।

कर्म कारक– क्रिया के फल के आश्रय को कर्म कारक कहते हैं।

करण कारक – जो क्रिया के सम्पादन में प्रमुख सहायक हो, वह करण कारक है।

सम्प्रदान कारक – जिसके लिए क्रिया की जाए, वह सम्प्रदान कारक है।

अपादान कारक – जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

सम्बन्ध कारक – जिससे सम्बन्ध हो, वह सम्बन्ध कारक है।

अधिकरण कारक – क्रिया का आधार अधिकरण है।

सम्बोधन – प्रथमा की तरह।

नियम निर्देश –

– प्राकृत में एकवचन और बहुवचन ही होता है।
– चतुर्थी और षष्ठी विभक्तियों में समानता है। इन दोनों में समान रूप से चलते हैं।
– प्राकृत में हलन्त नहीं होता है।
– प्राकृत में विसर्ग नहीं होता है।

सण्णा (संज्ञा)

किसी व्यक्ति, वस्तु एवं सीन के नाम को संज्ञा कहते हैं जैसे :–

वाक्य	संज्ञा
सुरेसो पढइ।	सुरेश (सुरेश)
अहं विज्जालयं गच्छामि।	विज्जालयं (विद्यालय)
उदयपुरो रम्मो ठाणं।	उदयपुरो (उदयपुर)
एसो बालो अत्थि।	बालो (बाल–बालक)
पोत्थअं गण्हेइ।	पोत्थअं (पुस्तक)

सण्णा भेदा – संज्ञा भेद

सण्णाए तिभेदा– संज्ञा के तीन भेद हैं।

1. जणसूचग–सण्णा – व्यक्ति वाचक संज्ञा– जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध हो वह व्यक्ति वाचक संज्ञा है। जहा–

• देवो मंदिरे अत्थि – देवो व्यक्ति वाचक संज्ञा, मंदिर–स्थान, देवो प्राणी वाचक है।
• रायगिहीए भवणाणि सुंदेरा – रायगिही (स्थान) भवणाणि (भवन–वस्तु है।)

2. जाइ–वाचग–सण्णा– जाति वाचक संज्ञा –

जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के समूह या जाति का ज्ञान हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जहा –

सेणिगा जुज्झंति।	सैनिक
गो दुद्धो उत्तमो हवइ	गो दूध।
अंबरसो महुरो हवइ।	आम रस जाति वाचक हैं।

3. भाव वाचग–सण्णा– भाव वाचक संज्ञा –

जिन शब्दों से किसी के गुण, स्वभाव, भावना या दशा का ज्ञान हो उन शब्दों को भाववाचक या गुणवाचक संज्ञा कहते हैं।

जिणेसो उत्तमो बालो।	उत्तमो (गुण)
मे पादेसुं पीडा अत्थि।	पीडा (दशा)
साहगो झाणी हवइ।	झाणी– (भावना) है।

संज्ञा किसे कहते हैं–

अ) काम होना (ब) ते (वे) (स) मणुओ (द) उत्तमो (स)

इनमें से जातिवाचक संज्ञा कौन है?

(अ) देवा (ब) णाणी (स) भवणं (द) विरागो (अ)

इनमें से भाववाचक संज्ञा कौन है?

(अ) जीवो (ब) णिम्मलो (स) छिंदो (द) इमं (ब)

संज्ञा शब्द –

अकारांत पुंलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा –	ओ	दीर्घ – आ
द्वितीया –	(–)	दीर्घ एवं ए
तृतीया –	ण–एण, णं–एणं	हि–एहि, एहिं
चतुर्थी –	स्स	ण–आण, णं–आणं
पंचमी –	त्तो, ओ	ओ, हिंतो
षष्ठी –	स्सण–आण,	णं–आणं
सप्तमी –	ए, स्सि	सु–एसु, एसुं
संबोधन –	ण प्रत्यय लोप – ओ	आ

अ. पुंलिंग बाल शब्द के रूप

प्रथमा	बालो,बाला
द्वितीया	बालं,बाला, बाले
तृतीया	बालेण, बालेणं,बालेहि, बालेहिं
चतुर्थी	बालस्स,बालाण, बालाणं
पंचमी	बालत्तो, बालाओ,बालाओ, बालहिंतो
षष्ठी	बालस्स बालाण, बालाणं
सप्तमी	बाले, बालम्मि,बालेसु, बालेसुं
सम्बोधन	बाल! बालो! बाला!

संकेत – बाल शब्द की तरह छत, सीस, णर, णिव आदि के रूप बनेंगे।

पहचानिए और शब्दों की विभक्तियाँ लिखिए –

– बालस्स, सीसं, णिवत्तो, णरम्मि

इकारांत पुंलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमालुक् –	दीर्घ	लुक् – दीर्घ, णो

द्वितीया	(–) अनुसार	लुक् – दीर्घ, णो
तृतीया	णा	हि – हिं होने पर दीर्घ
चतुर्थी	स्स, णो	ण, णं होने पर दीर्घ
पंचमी	ओ होने पर दीर्घ	ओ, हिंतो होने पर दीर्घ
षष्ठी	स्स, णो	ण, णं होने पर दीर्घ
सप्तमी	म्मि	सु – सुं होने पर दीर्घ
सम्बोधन प्रत्यय लोप	लुक् – दीघ्र	

इ. पुंलिंग मुणि शब्द के रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	मुणी	मुणी, मुणिणो
द्वितीया	मुणिं	मुणि, मुणिणो
तृतीया	मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिं
चतुर्थी	मुणिस्स,मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
पंचमी	मुणीओ	मुणीओ, मुणीहिंतो
षष्ठी	मुणिस्स, मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
सप्तमी	मुणिम्मि	मुणीसु, मुणीसुं
सम्बोधन	मुणि!	मुणी!

उकारान्त पुंलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	दीर्घ	दीर्घ, णो
द्वितीया	(–) अनुस्वार	दीर्घ, णो
तृतीया	णा	हि, हिं
चतुर्थी	स्स, णो	ण, णं
पंचमी	ओ	ओ, हिंतो, सुंतो
षष्ठी	स्स, णो	ण, णं
सप्तमी	म्मि	सु, सुं
सम्बोधन	लुक्	दीर्घ

उकारान्त पुंलिंग 'भाणु' शब्द रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	भाणू	भाणू, भाणुणो
द्वितीया	भाणु	भाणू, भाणुणो
तृतीया	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं
चतुर्थी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
पंचमी	भाणूओ	भाणूओ, भाणूहिंतो, भाणूसुंतो
षष्ठी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
सप्तमी	भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं
सम्बोधन	भाणु!	भाणू!

संकेत – 'भाणु' षब्द की तरह साहु, सिसु, गुरु, तरु, पसु, भिक्खु आदि के रूप बनेंगे।

– ण णं, सु सुं, ओ, हिंतो, सुंतो अव्यय होने पर ह्रस्व उकारांत शब्दों का दीर्घ हो जाता है।

– दीर्घ उकारांत शब्दों का दीर्घ ही रहता है।

– स्स, णो प्रत्यय होने पर दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है। जैसे– केवलिस्स, केवलिणो, जंबुस्स, जंबुणो

संकेत – मुणि इकारांत पुंलिंग शब्द की तरह सुधि, कवि, जोगि, णाणि के रूप बनेंगे।

पहचानिए और शब्दों की विभक्तियाँ बतलाइए –

मुणिणो, मुणीणं, कविणा, सुधिम्मि

स्त्रीलिंग शब्द

आकारांत स्त्रीलिंग शब्द

बाला, माला, सरिआ, कण्णा, णिसा, दिसा, सुण्हा, भारिआ

ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द

जुवई, रई, साडी, इत्थी, दासी, तरुणी, बहिणी

उकारांत स्त्रीलिंग शब्द

बहु, धेणु, विज्जु, चंचु

आकारांत स्त्रीलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	दीर्घ	दीर्घ, ओ–आओ
द्वितीया	(–) अनुस्वार होने पर दीर्घ शब्द का ह्रस्व	दीर्घ, ओ–आओ
तृतीया	ए	हि हिं
चतुर्थी	ए	ण, णं
पंचमी	ए, हिंतो	ओ, सुंतो
षष्ठी	ए	ण, णं
सप्तमी	ए	सु, सुं
संबोधन	ह्रस्व	दीर्घ

आकारांत स्त्रीलिंग 'माला' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	माला	माला, मालाओ
द्वितीया	मालं	माला, मालाओ
तृतीया	मालाए	मालाहि, मालाहिं
चतुर्थी	मालाए	मालाण, मालाणं
पंचमी	मालाए, मालाहिंतो	मालाओ, मालासुंतो
षष्ठी	मालाए	मालाण, मालाणं
सप्तमी	मालाए	मालासु, मालासुं
सम्बोधन	माल!	माला!

संकेत – 'माला' शब्द की तरह बाला, सरिआ, कण्णा, दिसा, गिरा आदि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और शब्दों की विभक्तियाँ बतलाइए –

मालाए, मालाओ, माल!, मालाहि

ईकारांत स्त्रीलिंग के प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रत्यय लोप	लुक्–दीर्घ ओ
द्वितीया	(–) अनुस्वार दीर्घ का ह्रस्व	लुक्–दीर्घ ओ
तृतीया	ए	हि हिं
चतुर्थी	ए	ण णं
पंचमी	ए, ओ	हिंतो, सुंतो
षष्ठी	ए	ण णं

सप्तमी	ए	सु सुं
सम्बोधन	लुक्, ह्रस्व	दीर्घ

ईकारांत स्त्रीलिंग 'इत्थी' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इत्थी	इत्थी, इत्थीओ
द्वितीया	इत्थिं	इत्थी, इत्थीओ
तृतीया	इत्थीए	इत्थीहि, इत्थीहि
चतुर्थी	इत्थीए	इत्थीण, इत्थीणं
पंचमी	इत्थीए, इत्थीओ	इत्थीहिंतो, इत्थीसुंतो
षष्ठी	इत्थीए	इत्थीण, इत्थीणं
सप्तमी	इत्थीए	इत्थीसु, इत्थीसुं
सम्बोधन	इत्थि!	इत्थी! इत्थीओ!

संकेत – इत्थी शब्द की तरह साडी, दासी, जुवई, कुमारी, तरुणी आदि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और शब्दों की विभक्तियाँ बतलाइए –

इत्थिं, इत्थीहि, इत्थीसुंतो, इत्थीए

उकारांत स्त्रीलिंग के प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लुक् – दीर्घ	लुक् – दीर्घ, ओ
द्वितीया	(–) अनुस्वार	लुक् – दीर्घ, ओ
तृतीया	ए	हि हिं
चतुर्थी	ए	ण णं
पंचमी	ए, ओ	हिंतो, सुंतो
षष्ठी	ए	ण णं
सप्तमी	ए	सु सुं
सम्बोधन	ह्रस्व	दीर्घ

उकारांत स्त्रीलिंग 'धेणु' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेणू	धेणू, धेणूओ
द्वितीया	धेणुं	धेणू, धेणूओ
तृतीया	धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं
चतुर्थी	धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पंचमी	धेणूए, धेणूओ	धेणूहिंतो, धेणूसिंतो
षष्ठी	धेणूए	धेणूण, धेणूणं
सप्तमी	धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सम्बोधन	धेणु!	धेणू!

संकेत – धेणु शब्द की तरह विज्जु, चंचु, गड, रज्जु आदि के रूप बनेंगे।

पहचानिए और विभक्तियाँ बतलाइए –

धेणुं, धेणूए, धेणूसु, धेणूसुंतो

अकारांत नपुंसकलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	(–)	इ इं णि होने पर दीर्घ

द्वितीया	(–)	इ इं णि होने पर दीर्घ
तृतीया	ण–एण	हि–एहि, हिं–एहिं
चतुर्थी	स्स	ण णं
पंचमी	ओ	ओ हिंतो सुंतो
षष्ठी	स्स	ण णं
सप्तमी	ए म्मि	सु सुं

अकारांत नपुंसकलिंग 'फल' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलं	फलाइ, फलाइं, फलाणि
द्वितीया	फलं	फलाइ, फलाइं, फलाणि
तृतीया	फलेण	फलेहि, फलेहिं
चतुर्थी	फलस्स	फलाण, फलाणं
पंचमी	फलाओ	फलाओ, फलाहिंतो, फलासुंतो
षष्ठी	फलस्स	फलाण, फलाणं
सप्तमी	फले, फलम्मि	फलेसु, फलेसुं

संकेत – फल शब्द की तरह पुप्फ, कमल, धण, कम्म, मित, सुह, दुह आदि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और विभक्तियाँ बतलाइए –

फलं, फलाणि, फलाओ, फलाण, फलेसु

इकारांत नपुंसकलिंग प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	(–)	इ इं णि होने पर दीर्घ
द्वितीया		इ इं णि होने पर दीर्घ
तृतीया	णा	हि हिं होने पर दीर्घ
चतुर्थी	स्स णो	ण णं होने पर दीर्घ
पंचमी	ओ हिंतो होने पर दीर्घ	ओ सुंतो होने पर दीर्घ
षष्ठी	स्स णो	ण णं होने पर दीर्घ
सप्तमी	म्मि	सु सुं होने पर दीर्घ

इकारांत नपुंसकलिंग 'वारि' शब्द रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारिं	वाराइ, वाराइं, वारीणि
द्वितीया	वारिं	वाराइ, वाराइं, वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहि, वारीहिं
चतुर्थी	वारिस्स वारिणो	वारीण वारीणं
पंचमी	वारीओ वारीहिंतो	वारीओ वारीसुंतो
षष्ठी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
सप्तमी	वारिम्मि	वारीसु, वारीसुं

संकेत – वारि की तरह दहि, अक्खि, अट्ठि आदि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और विभक्तियाँ बतलाइए –

वारिं, वारीइं, वारिम्मि, वारीणं

उकारांत नपुंसकलिंग 'वत्थु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि

द्वितीया	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि
तृतीया	वत्थुणा	वत्थूहि वत्थूहिं
चतुर्थी	वत्थुस्स वत्थुणो	वत्थूण वत्थूणं
पंचमी	वत्थूओ वत्थूहिंतो	वत्थूओ वत्थूसुंतो
सप्तमी	वत्थुम्मि	वत्थूसु, वत्थूसुं

संकेत – वत्थु शब्द की तरह महु, अंसु आदि के रूप चलेंगे।

अकारांत पुंलिंग 'पुरिस' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुरिसो	पुरिसा
द्वितीया	पुरिसं	पुरिसा, पुरिसे
तृतीया	पुरिसेण, पुरिसेणं	पुरिसेहि, पुरिसेहिं
चतुर्थी	पुरिसस्स	पुरिसाण, पुरिसाणं
पंचमी	पुरिसत्तो, परिसाओ	पुरिस्सो, पुरिसाओ, पुरिसाहिंतो,
षष्ठी	परिसहस	पुरिसाण, पुरिसाणं
सप्तमी	पुरिसे, पुरिसम्मि	पुरिसेसु, परिसेसुं
सम्बोधन	पुरिस! पुरिसो!	परिसा!

संकेत – 'पुरिस' की तरह णिव, सीस, जीव, बुह आदि के रूप चलेंगे।

अकारांत पुंलिंग 'णर' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	णरो	णरा
द्वितीया	णरं	णरा, णरे
तृतीया	णरेण, णरेणं	णरेहि, णरेहिं
चतुर्थी	णरस्स	णराण, णराणं
पंचमी	णरत्तो, णराओ	णरत्तो, णराओ, णराहिंतो, णरासुंतो
षष्ठी	णरस्स	णराण, णराणं
सप्तमी	णरे, णरम्मि	णरेसु, णरेसुं
सम्बोधन	णर! णरो!	णरा!

संकेत – 'णर' की तरह छत, विमल, उसह, पास आदि के रूप चलेंगे।

इकारांत 'सुधि' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधी	सुधी, सुधिणो
द्वितीया	सुधिं	सुधी, सुधिणो
तृतीया	सुधिणा	सुधीहि, सुधीहिं
चतुर्थी	सुधिस्स, सुधिणो	सुधीण, सुधीणं
पंचमी	सुधित्तो, सुधीओ, सुधिणो	सुधित्तो, सुधीओ, सुधीहिंतो, सुधीसुंतो
षष्ठी	सुधिस्स, सुधिणो	सुधीण, सुधीणं
सप्तमी	सुधिम्मि	सुधीसु, सुधीसुं
सम्बोधन	सुधि!	सुधी!

संकेत – 'सुधि' की तरह कवि, करि, हरि आदि के रूप चलेंगे।

– सुधि में या अन्य इकारांत शब्द में (–) अनुस्वार होने पर सुधिं, दीर्घ ईकारांत केवली या वाणी शब्द होने पर दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है। केवली (–) = केवलिं, वाणी +(–) वाणिं।

इकारांत पुंलिंग 'कवि' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवि–दीर्घ–कवी	कवि–दीर्घ कवी, कवि+णो=कविणो
द्वितीया	कविं	कवी, कविणो
तृतीया	कविणा	कवीहि, कवीहिं
चतुर्थी	कविस्स, कविणो	कवीण, कवीणं
पंचमी	कवित्तो, कवीओ, कविणो	कवित्तो, कवीओ, कवीहिंतो, कवीसुंतो
षष्ठी	कविस्स	कवीण, कवीणं
सप्तमी	कविम्मि	कवीसु, कवीसुं
सम्बोधन	कवि!	कवी!

संकेत – णो, णा, स्स, म्मि, तो होने पर दीर्घ नहीं होता है।
- संयोगी स्स, म्मि, तो प्रत्यय है, जिन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
- स्स, म्मि, तो संयुक्त हैं, इनके होने पर दीर्घ ईकारांत केवली, णाणी के दीर्घ 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है। यथा, केवली+स्स = केवलिस्स।
- केवली+तो = केवलितो।
- केवली+म्मि = केवलिम्मि।

उकारांत पुंलिंग 'साहु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	साहू	साहू, साहुणो
द्वितीया	साहुं	साहू, साहुणो
तृतीया	साहुणा	साहूहि, साहूहिं
चतुर्थी	साहुस्स, साहुणो	साहूण, साहूणं
पंचमी	साहुतो, साहूओ	साहुतो, साहूओ, साहूहिंतो, साहूसुंतो
षष्ठी	साहुस्स, साहुणो	साहुण, साहूणं
सप्तमी	साहुम्मि	साहुसू, साहूसुं
सम्बोधन	साहु!	साहू!

संकेत – ण, णं (चतुर्थी / षष्ठी बहुवचन) हि हिं (तृतीया बहुवचन)।
- ओ हिंतो / सुंतो (पंचमी बहुवचन) ओ (पंचमी एकवचन)।
- सु, सुं सप्तमी बहुवचन के प्रत्यय होने पर दीर्घ हो जाता है।

उकारांत पुंलिंग 'गुरु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरु	गुरु, गुरुणो
द्वितीया	गुरुं	गुरु, गुरुणो
तृतीया	गुरुणा	गुरुहि, गुरुहिं
चतुर्थी	गुरुस्स, गुरुणो	गुरुण, गुरुणं
पंचमी	गुरुतो, गुरुओ, गुरुणो	गुरुतो, गुरुओ, गुरुहिंतो, गुरुसुंतो
षष्ठी	गुरुस्स, गुरुणो	गुरुण, गुरुणं
सप्तमी	गुरुम्मि	गुरुसु, गुरुसुं
सम्बोधन	गुरु!	गुरु!

आकारांत स्त्रीलिंग 'सरिआ' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरिआ	सरिआ, सरिआओ
द्वितीया	सरिअं	सरिआ, सरिआओ
तृतीया	सरिआइ,	सरिआए सरिआहि, सरिआहिं
चतुर्थी	सरिआइ, सरिआए	सरिआण, सरिआणं
पंचमी	सरिआइ, सरिआए	सरिआओ, सरिआहिंतो, सरिआसुंतो
षष्ठी	सरिआइ, सरिआए	सरिआण, सरिआणं
सप्तमी	सरिआइ, सरिआए	सरिआसु, सरिआसुं
सम्बोधन	सरिआ!	सरिआओ!

संकेत – सरिआ की तरह भारिया, दिरसा, गिरा आदि के रूप बनेंगे।

आकारांत स्त्रीलिंग 'णिसा' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	णिसा	णिसा, णिसाओ
द्वितीया	णिसं	णिसा, णिसाओ
तृतीया	णिसाइ, णिसाए	णिसाहि, णिसाहिं
चतुर्थी	णिसाइ, णिसाए	णिसाण, णिसाणं
पंचमी	णिसाइ, णिसाए	णिसाओ, णिसाहिंतो, णिसासुंतो
षष्ठी	णिसाइ, णिसाए	णिसाण, णिसाणं
सप्तमी	णिसाइ, णिसाए	णिसासु, णिसासुं
सम्बोधन	णिसा!	णिसाओ!

ईकारांत स्त्रीलिंग 'दासी' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	दासी	दासी, दासीओ
द्वितीया	दासिं	दासी, दासीओ
तृतीया	दासीइ, दासीए	दासीहि, दासीहिं
चतुर्थी	दासीइ, दासीए	दासीण, दासीणं
पंचमी	दासीइ, दासीए	दासीओ, दासीहिंतो, दासीसुंतो
षष्ठी	दासीइ, दासीए	दासीण, दासीणं
सप्तमी	दासीइ, दासीए	दासीसु, दासीसुं
सम्बोधन	दासि!	दासी! दासीओ!

संकेत – दासी की तरह लच्छी, इत्थी, तरुणी आदि के रूप चलेंगे।

ईकारांत स्त्रीलिंग 'बहिणी' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहिणी	बहिणी, बहिणीओ
द्वितीया	बहिणि	बहिणी, बहिणीओ
तृतीया	बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीहि, बहिणीहिं
चतुर्थी	बहिणीइ, इहिणीए	बहिणीण, बहिणीणं
पंचमी	बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीओ, बहिणीहिंतो, बहिणीसुंतो
षष्ठी	बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीण, बहिणीणं
सप्तमी	बहिणीइ,	बहिणीए बहिणीसु, बहिणीसुं
सम्बोधन	बहिणि!	बहिणीओ!

संकेत – 1. स्त्रियामुदोतौ वा (हे.प्रा.व्या. 3/27) सूत्र से स्त्रीलिंग शब्दों के प्रथमा बहुवचन और द्विती'उ' प्रत्यय होते हैं। यथा–बहिणी+ओ=बहिणीओ, बहिणी+उ= बहिणीउ।
2. टा–ङस्–ङेरदादिदेद्वा तु ङसेः (हे. प्रा. व्या. 3/29) से स्त्रीलिंगवाची शब्दों में अ, आ, इ, ए प्रत्यय होते हैं।

अकारांत नपुंसकलिंग 'णयण' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	णयणं	णयणाइ, णयणाइं, णयणाणि
द्वितीया	णयणं	णयणाइ, णयणाइं, णयणाणि
तृतीया	णयणेण,	णयणेणं णयणेहि, णयणेहिं
चतुर्थी	णयणस्स	णयणाण, णयणाणं
पंचमी	णयणतो, णयणाओ	णयणतो, णयणाओ, णयणाहिंतो, णयणासुंतो
षष्ठी	णयणस्स	णयणाण, णयणाणं
सप्तमी	णयणे, णयणम्मि	णयणेसु, णयणेसुं

संकेत – 1. जस्–शस्–इ इं णयः सप्राग्दीर्घः (हे. 3/26) जस् (प्रथमा बहुवचन) और शस् (द्वितीया बहुवचन) के प्रत्यय के स्थान पर इ, इं और णि प्रत्यय होते हैं और इसी सूत्र से दीर्घ हो जाता है। अतः णयण+इ=णयणाइ, णयण+इं= णयणाइं, णयण+णि=णयणाणि।

अकारांत नपुंसकलिंग 'धण' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धणं	धणाइ, धणाइं, धणाणि
द्वितीया	धणं	धणाइ, धणाइं, धणाणि
तृतीया	धणेण, धणेणं	धणेहि, धणेहिं
चतुर्थी	धणस्स	धणाण, धणाणं
पंचमी	धणतो, धणाओ	धणतो, धणाओ, धणाहिंतो, धणासुंतो
षष्ठी	धणस्स	धणाण, धणाणं
सप्तमी	धणे, धणम्मि	धणेसु, धणेसुं
सम्बोधन	धण!'	धणाइ!

संकेत – 1. नामन्त्र्यात् सौ मः (हे.प्रा.व्या. 3/37) सूत्र से आमंत्रण (संबोधन) में अनुस्वार (–) नहीं होता है।

इकारांत नपुंसकलिंग 'दहि' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	दहिं	दहीइ, दहीइं, दहीणि
द्वितीया	दहिं	दहीइ, दहीइं, दहीणि
तृतीया	दहिणा	दहीहि, दहीहिं
चतुर्थी	दहिस्स, दहिणो	दहीण, दहीणं
पंचमी	दहितो, दहीसो, दहिणो	दहितो, दहीओ, दहीहिंतो, दहीसुंतो
षष्ठी	दहिस्स, दहिणो	दहीण, दहीणं
सप्तमी	दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सम्बोधन	दहि!	दहि!

उकारांत नपुंसकलिंग 'महु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	महुं	महुइ, महूइं, महूणि
द्वितीया	महुं	महूइ, महूइं, महूणि
तृतीया	महुणा	महूहि, महूहिं

चतुर्थी	महुस्स, महुणो	महूण, महूणं
पंचमी	महुतो, महूओ, महुणो	महुतो, महूओ, महूहिंतो, महूसुंतो
षष्ठी	महुस्स, महुणो	महूण, महूणं
सप्तमी	महुम्मि	महूसु, महूसुं
सम्बोधन	महु!	महु!

संकेत – महु की तरह चंचु के रूप चलेंगे।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अकारांत पुंलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) दहि (ख) महु
   (ग) णर (घ) सुधि ( )
2. इकारांत पुंलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) मुणि (ख) भाणु
   (ग) णर (घ) जंबू ( )
3. उकारांत पुंलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) कवि (ख) खंध
   (ग) सरिआ (घ) साहु ( )
4. आकारांत स्त्रीलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) सासू (ख) दासी
   (ग) कण्णा (घ) धेणु ( )
5. उकारांत स्त्रीलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) धण (ख) धेणु
   (ग) दासी (घ) णिसा ( )
6. ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) विज्जु (ख) जुवई
   (ग) बहू (घ) माला ( )
7. अकारांत नपुंसकलिंग शब्द इनमें से कौन ?
   (क) णयर (ख) दहि
   (ग) महु (घ) वाया ( )

वस्तुनिष्ठ प्रश्न की उत्तर माला

1–(ग), 2–(क), 3–(घ), 4–(ग), 5–(ख), 6–(ख), 7–(क)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1.प्राकृत में कितने वचन होते हैं ?
2.चतुर्थी का रूप कौनसा है ?अकारांत में।
3.तृतीया एकवचन में 'दहि' का क्या रूप बनेगा ?
4.पंचमी बहुवचन में 'माला' का क्या रूप बनेगा ?
5.स्त्रीलिंग में तृतीया से सप्तमी एकवचन में कौनसे रूप बनेंगे ?
6.नपुंसकलिंग के प्रथमा में कौनसा रूप बनेगा ?

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1.इकारांत पुंलिंग के पंचमी के रूप लिखिए।
2.सीस पुंलिंग के सभी रूप लिखिए।
3.बाला स्त्रीलिंग के तृतीया से सप्तमी तक के सभी रूप लिखिए।

4.नपुंसकलिंग में प्रथमा एवं द्वितीया को छोड़कर शेष तृतीया से सम्बोधन तक के रूप किस लिंग की तरह रूप बनेंगे ?

निम्नांकित शब्दों में कौनसी विभक्ति है ?

1.बालाण ( )
2.मालासुंतो ( )
3.दहीइ ( )
4.मुणीसु ( )
5.णयरस्स ( )
6.णिसाहि ( )

विभक्तियों का सही निर्देश कीजिए –

(क)	तृतीया	(1)	दहीइ
(ख)	प्रथमा बहुवचन	(2)	महुस्स
(ग)	सप्तमी	(3)	मुणिणा
(घ)	चतुर्थी	(4)	घणम्मि

शब्दों की उत्तरमाला

(क)–(3), (ख)–(1), (ग)–(4), (घ)–(2)

सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। तं जहा–
अहं पोत्थअं पढामि।
सो विज्जालयं गच्छइ।
ते णयरं पस्सेंति।
तुमं किं कुणसि।
तुम्हे पइदिणं कीलित्था।
उक्त वाक्यों में अहं, सो, ते, तुम, तुम्हे सर्वनाम हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्र.पु.	सो	ते
म.पु.	तुमं	तुम्हे
उ.पु.	अहं	अम्हे

सर्वनामों का प्रयोग ज्ञान

सर्वनाम – जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हों, वे सर्वनाम हैं।

'अम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं	अम्हे
द्वितीया	मं ममं	अम्हे
तृतीया	मए मया	अम्हेहि
चतुर्थी	मम, मज्झ, अम्ह	अम्हाण, अम्हाणं
पंचमी	ममतो, ममाओ	ममाओ, अम्हाहिंतो
षष्ठी	मम, मज्झ, अम्ह	अम्हाण, अम्हाणं
सप्तमी	अम्हम्मि, ममम्मि	अम्हेसु, अम्हेसुं

'तुम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुं, तुमं	तुम्ह, तुम्हे
द्वितीया	तुम, तुमं, तुं	तुम्ह, तुम्हे
तृतीया	तुए, तया, तुमे	तुम्हेहि, तुम्हेहिं
चतुर्थी	तुम्ह, तुम्हं	तुम्हाण, तुम्हाणं
पंचमी	तुज्झ, तुमाओ	तुम्हाहिंतो, तुम्हासुंतो
षष्ठी	तुम्ह, तुम्हं	तुम्हाण, तुम्हाणं
सप्तमी	तुम्हम्मि	तुम्हेसु, तुम्हेसु

पुंलिंग 'त' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो	ते
द्वितीया	तं	ते
तृतीया	तेण, तेणं	तेहि, तेहिं
चतुर्थी	तस्स	तण, ताणं, तेसिं
पंचमी	तत्तो, ताओ, तम्हा	तत्तो, ताओ, ताहिंहो
षष्ठी	तस्स	ताण, ताणं, तेसिं
सप्तमी	तस्सिं, तहिं	तेसु, तेसुं

संकेत – 'त' सर्वनाम की तरह क, ज, सव्व, अण्ण, उहय आदि के रूप बनेंगे।

पुंलिंग 'क' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	केण, केणं	केहि, केहि
चतुर्थी	कस्स	काण, काणं, केसिं
पंचमी	कत्तो, काओ, कम्हा	कत्तो, काओ, काहिंतो
षष्ठी	कस्स	काण, काणं, केसिं
सप्तमी	कस्सिं, कहिं	केसु, केसुं

पुंलिंग 'ज' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	जं	जे
तृतीया	जेण, जेणं	जेहि, जेहिं
चतुर्थी	जस्स	जाण, जाणं, जेसिं
पंचमी	जत्तो, जाओ, जम्हा	जत्तो, जाओ, जाहिंतो
षष्ठी	जस्सं	जाण, जाणं, जेसिं
सप्तमी	जस्सिं	जेसु, जेसुं

नपुंसकलिंग 'ज' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं	जाइ, जाइं, जाणिं
द्वितीया	जं	जाइ, जाइं, जाणिं
तृतीया	जेण, जेणं	जेहि, जेहिं

चतुर्थी	जस्स	जाण, जाणं, जेसिं
पंचमी	जतो, जाओ	जतो, जाओ, जाहिंतो
षष्ठी	जस्स	जाण, जाणं, जेसिं
सप्तमी	जस्सिं, जहिं	जेसु, जेहां

नपुंसकलिंग 'क' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	किं, कं	काइ, काइं, काणि
द्वितीया	किं, कं	काइ, काइं, काणि
तृतीया	केण, केणं	केहि, केहिं
चतुर्थी	कस्स	काण, काणं, केसि
पंचमी	कतो, काओ	कतो, काओ, काहिंतो
षष्ठी	कस्स	काण, काणं, केसिं
सप्तमी	कस्सिं, कहिं	केसु, केसुं

स्त्रीलिंग 'का' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	काओ, काउ
द्वितीया	कं	काओ, काउ
तृतीया	काए	काहि, काहिं
चतुर्थी	काए	काण, काणं, कासिं
पंचमी	काए, कतो	कतो, काहिंतो
षष्ठी	काए	काण, काणं, कासिं
सप्तमी	काए	कासु, कासुं

स्त्रीलिंग 'जा' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा	जाओ, जाउ
द्वितीया	जं	जाओ, जाउ
तृतीया	जाए	जाहि, जाहिं
चतुर्थी	जाए	जाण, जाणं, जासिं
पंचमी	जाए, जतो	जातो, जाहिंतो
षष्ठी	जाए	जाण, जाणं, जासिं
सप्तमी	जाए	जासु, जासुं

संकेत – 'जा' की तरह सण्वा, अण्णा, इमा आदि सर्वनाम शब्दों की तरह रूप चलेंगे।

पहचानिए और लिंग सहित विभक्ति नाम बतलाइए –

केसिं, कस्स, जतो, जाओ, जासु, अम्हाण, अम्हेहि।

पुंलिंग 'इम' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो, अयं, इणं	इमे, णे
द्वितीया	इमं, इणं	इमे, णे
तृतीया	इमेण, इमेणं, णेण, णेणं	इमेहि, इमेहिं, णेहि, णेहिं
चतुर्थी	इमस्स, अस्स	इमाण, इमाणंसिं
पंचमी	अतो, इमाओ	इमाओ, इमाहिंतो

षष्ठी	इमस्स, अस्स	इमाण, इमाणंसिं
सप्तमी	इमम्मि, अस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं

स्त्रीलिंग 'इमा' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा	इमाओ, इमाउ
द्वितीया	इमं, इणं	इमाओ, इमाउ
तृतीया	इमाए	इमाहि, इमाहिं
चतुर्थी	इमाए	इमाण, इमाणं सिं
पंचमी	इमतो, इमाए	इमाओ, इमाहिंतो
षष्ठी	इमाए	इमाण, इमाणं सिं
सप्तमी	इमाए, इमसिं	इमासु, इमासुं

नपुंसकलिंग 'इम' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमं	इमाइ, इमाइं, इमाणि
द्वितीया	इमं	इमाइ, इमाइं, इमाणि

संकेत – 'इम' शब्द के तृतीया से सप्तमी पर्यन्त पुंलिंग शब्द की तरह रूप चलेंगे।

अभ्यास

सर्वनाम प्रयोग ज्ञान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(प) तृतीया का प्रयोग रूप सर्वनाम कौनसा है ?
(क) मम (ख) मए
(ग) अम्ह (घ) अम्हे ( )

(पप) तुमाओ किस विभक्ति का रूप है ?
(क) षष्ठी (ख) सप्तमी
(ग) पंचमी (घ) चतुर्थी ( )

(पपप) तेण / तेणं किस विभक्ति का रूप है ?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी
(ग) सप्तमी (घ) प्रथमा ( )

(पअ) जं किस विभक्ति का रूप है ?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी
(ग) पंचमी (घ) द्वितीया ( )

उत्तरमाला –

(प) – (ख), (पप) – (ग), (पपप) – ( ), (पअ) – (घ)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(प) का स्त्रीलिंग सर्वनाम का 'काओ' रूप किसमें बनता है ?
(पप) जेसिं किस विभक्ति का रूप है ?
(पपप) जतो किस विभक्ति का रूप है ?
(पअ) कम्हा किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) जाइ किस विभक्ति का रूप है ?

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

(प) 'जा' सर्वनाम स्त्रीलिंग के तृतीया के रूप लिखिए।
(पप) 'क' सर्वनाम नपुंसकलिंग के प्रथमा एवं द्वितीया के रूप लिखिए।

(पपप) 'इम' सर्वनाम के षष्ठी में क्या रूप बनेंगे ?
(पअ) पंचमी विभक्ति सर्वनाम 'इम' के रूप लिखिए।

प्रश्न –

सर्वनाम किसे कहते हैं। उदाहरण दीजिए?
संज्ञा किसे कहते हैं?
2. निम्नांकित वाक्यों में सर्वनाम प्रयोग करो।
(क) किं..............बालो गच्छइ।
(ख) ....चलते हो।..........................चलसि।
(ग) ....लिखता हूँ। ....लिहामि।
3. निम्न वाक्यों में से संज्ञा हटाकर सर्वनाम लिखिए।
(क) चंदणा मंदिरं आगच्छइ।
(ख) बालाओ णच्चंति।
(ग) साहूणं णमो।
(घ) उदयो वड्ढमाणं पणमामि।

क्रिया (verb) –

जिन शब्दों से काम का होना या करने का ज्ञान हो वह क्रिया है। तं जहा –
(1) सो सुणइ लिहइ चिंतइ।
(2) ताओ णच्चंति ।
(3) अम्हे अत्थ चिट्ठमो।
(4) तम्हे अणुपेहित्था।
उक्त वाक्यों में सुणइ, लिहइ, चिंतइ, चिट्ठमो, णच्चंति अणुपेहित्था क्रियाएं हैं।निम्न वाक्यों में क्रिया प्रयोग कीजिए?(1) अहं पइदिणं................................ ।
(2) सो किं.. ।
(3) महिंदो.. ।
(4) वागरणं.. ।

प्राकृत क्रिया प्रकरण

– वर्तमान काल (लट्लकार)
– भविष्यत् काल (लृट्लकार)
– विधि–आज्ञार्थक
– भूतकाल (लिट्लकार)

वर्तमानकाल प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इ	न्ति झ अंति
मध्यम पुरुष	सि	इत्था
उत्तम पुरुष	मि झ आमि	मो झ आमो

वर्तमानकाल 'भण' क्रिया (कहना)

प्रथम पुरुष	भणइ	भणंति
मध्यम पुरुष	भणसि	भणित्था
उत्तम पुरुष	भणामि	भणामो

संकेत – गच्छ, पिव, भुंज, हस, पढ़ इत्यादि क्रियाओं के रूप भण की तरह चलेंगे।

पहचानिए और क्रिया का पुरुष एवं वचन बतलाइए –

भणामि, भणसि, भणइ

भविष्यत्काल के प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्स+इ	स्स+न्ति, अंति
मध्यम पुरुष	स्स+सि	स्स+इत्था
उत्तम पुरुष	स्स+मि	स्स+मो

भविष्यत्काल की पहचान 'स्स' 'पढ' के रूप

प्रथम पुरुष	पढिस्सइ	पढिस्संति
मध्यम पुरुष	पढिस्ससि	पढिस्सित्था
उत्तम पुरुष	पढिस्सामि	पढिस्सामो

संकेत – इच्छ सुण भुंज , णच्च , पास इत्यादि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और क्रिया का पुरुष एवं वचन बतलाइए –

पढिस्संति पढिस्सित्था पढिस्सामो

विधि/आज्ञार्थक प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	उ	न्तु झ अंतु
मध्यम पुरुष	हि	ह
उत्तम पुरुष	मु	मो

विधि/आज्ञार्थक 'हस' (हसना) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसउ	हसंतु
मध्यम पुरुष	हसहि	हसह
उत्तम पुरुष	हसमु	हसमो

संकेत – हस की तरह चिंत , चल भम , सेव , कील इत्यादि के रूप चलेंगे।

पहचानिए और क्रिया का पुरुष एवं वचन बतलाइए –

हसउ हसमु हसह

भूतकाल के प्रतीक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ईअ	ईअ
मध्यम पुरुष	ईअ	ईअ
उत्तम पुरुष	ईअ	ईअ

भूतकाल 'णम' (नमन करना) के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	णमीअ	णमीअ
मध्यम पुरुष	णमीअ	णमीअ
उत्तम पुरुष	णमीअ	णमीअ

'दा' देना धातु के रूप

वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देइ	देंति
मध्यम पुरुष	देसि	देइत्था
उत्तम पुरुष	देमि	देमो

भविष्यत् काल 'हि'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दाहिइ	दाहिति
मध्यम पुरुष	दाहिसि	दाहित्था
उत्तम पुरुष	दाहिमि	दाहिमो

विधि/आज्ञार्थक 'दा' धातु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देउ	देतु
मध्यम पुरुष	देहि	देह
उत्तम पुरुष	देमु	देमो

भूतकाल 'दा' धातु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दासी, दाही, दाहीअ	दासी, दाही, दाहीअ
मध्यम पुरुष	दासी, दाही, दाहीअ	दासी, दाही, दाहीअ
उत्तम पुरुष	दासी, दाही, दाहीअ	दासी, दाही, दाहीअ

संकेत – दा की तरह णे, हो आदि के रूप चलेंगे।

क्रिया रूप

वर्तमान काल[1] – जाण (जानना)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जाणइ	जाणंति
मध्यम पुरुष	जाणसि	जाणित्था
उत्तम पुरुष	जाणामि	जाणामो

भविष्यत्काल – जाण

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जाणिस्सइ	जाणिस्संति
मध्यम पुरुष	जाणिस्ससि	जाणिस्सित्था
उत्तम पुरुष	जाणिस्सामि	जाणिस्सामो

संकेत – 1. त्यादिनामाद्यत्रयस्याधस्येचे–चौ (हे.प्रा.व्या. 3/139) द्वितीयस्य सि से (हे.प्रा.व्या. 3/140), तृतीयस्य मिः (हे.प्रा. व्या. 3/141), बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे (हे.प्रा.व्या. 3/142), मध्यस्येत्था हचौ (हे. प्रा.व्या. 3/143), तृतीयस्य मो मु माः (हे.प्रा.व्या. 3/144)।

विधि/आज्ञा[1] – जाण

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जाणउ	जाणंतु
मध्यम पुरुष	जाणहि	जाणह
उत्तम पुरुष	जाणमु	जाणमो

संकेत – 1. दु सु मु अिवध्यादिष्वेकस्मिंत्रयाणाम् (हे.प्रा.व्या. 3/173) सो र्हि र्वा (हे. प्रा.व्या. 3/174), बहुसु न्तु हमो (हे.प्रा.व्या. 3/176)।

भूतकाल[2] – 'जाण'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जाणीअ	जाणीअ
मध्यम पुरुष	जाणीअ	जाणीअ

उत्तम पुरुष	जाणीअ	जाणीअ

संकेत – 2. व्यंजनादीअः (हे.प्रा.व्या. 3/163) भूतकाल में जाण, भण, हस, लिह आदि में ईअ प्रत्यय होता है।

– भूतकाल में का, ठा, णे जैसी क्रियाओं में सी ही और हीअ प्रत्यय होंगे। कासी, काही, काहीअ। ठासी, ठाही, ठाहीअ। णेसी, णेही, णेहीअ।
– तीनों पुरुषों के दोनों वचनों में समान रूप चलते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सो कासी	ते कासी
मध्यम पुरुष	तुम कासी	तुम्हे कासी
उत्तम पुरुष	अहं कासी	अम्हे कासी

सो कासी – उसने किया। ते कासी – उन्होंने किया।
तुम कासी – तूने किया। तुम्हे कासी – तुम/तुम दोनों/तुम सबने किया।
अहं कासी – मैंने किया। अम्हे कासी – हम/हम सबने किया।

– का – करना। ठा – ठहरना, रहना। णे – ले जाना।
– सी ही हीअ भूतार्थस्य (हे.प्रा.व्या. 3/162)
– अस – होना – अस्त्रिुत – का आति/अहेसि होगा। तेनास्तेराष्यहेसी (हे.प्रा.व्या. 3/164)

सो असि/अहेसि	ते आसि/अहेसि
तुम आसि/अहेसि	तुम्हे आसि/अहेसि
अहं आसि/अहेसि	आहे आसि/अहेसि

वर्तमानकाल 'गच्छ' – जाना, गमन करना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छइ	गच्छंति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छित्था, गच्छह
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छामो

भविष्यत्काल1 'गच्छ'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छिस्सइ	गच्छिस्संति
मध्यम पुरुष	गच्छिस्ससि	गच्छिस्सित्था
उत्तम पुरुष	गच्छिस्सामि	गच्छिस्सामो

संकेत – 1. भविष्यत्काल में 'स्स' और 'हि' भी होता है। भविष्यति हिरादिः (हे.प्रा.व्या. 3/166)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छिहिइ	गच्छिहिंति
मध्यम पुरुष	गच्छिहिसि	गच्छिहिथा, गच्छिहिह
उत्तम पुरुष	गच्छिहिमि	गच्छिहिमो

विधि/आज्ञा 'गच्छ'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छउ	गच्छंतु
मध्यम पुरुष	गच्छहि	गच्छह
उत्तम पुरुष	गच्छमु	गच्छमो

भूतकाल 'गच्छ'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छीअ	गच्छीअ

मध्यम पुरुष	गच्छीअ	गच्छीअ
उत्तम पुरुष	गच्छीअ	गच्छीअ

संकेत – भण – कहना। जाण – जानना। इच्छ – इच्छा करना। पिव – पीना, पान करना। खेल – खेलना। हस – हसना। पढ़ – पढ़ना। सुण – सुनना। णच्च – नाचना। दा – देना। ठो – ले जाना। हो/हव – होना।

क्रियाएँ

पास	पश्य	देखना
घाव	घाव	दौड़ना
णम	नम्	नमन करना
चल	चल्	चलना
चिंत	चिन्त्	चिंतन करना/सोचना
भम	भ्रम्	घूमना
जय	जी	जीतना
सेव	सेव्	सेवा करना
पेस		भेजना
कीण	क्रीड़ा	खेलना
पाल	पांल्	पालना/रक्षा करना
सीख		सीखना
गज्ज		गरजना
पस्स	दृश्	देखना
कड्ढ		निकालना
छिन्न		अलग करना
दह	दह्	जलना
सोह		चमकना
पड	पठ्	गिरना
उट्ठ		उठना
जाण		जानना
इच्छ	इष्	इच्छा करना

कृदन्त –

धातुओ के अन्त में जोड़कर जिन प्रत्ययों द्वारा संज्ञा विशेषण और अव्यय वाचक शब्द बनते हैं, उन्हें कृत कहते है तथा उनके योग से बने शब्द कृदंत कहलाते है।

पूर्ण क्रिया से पूर्व अपूर्ण क्रियात्मक प्रयोग कृदन्त है।

(वर्तमान कृदंत और उसके प्रत्यय न्त माण।

तं जहा – पढंतो (पुं.) पढंता (स्त्री.) पढता हुआ।
पढमाणो (पुं.) पढमाणा (स्त्री.) पढती हुई।

तं जहा – (1) अहं पढंतो गच्छामि – मैं पढ़ता हुआ जाता हूँ।

(2) ते चिंतिदूण पढंति– वे सोचकर (स्मरण करके) पढ़ते हैं।

सम्बन्धकृदंत प्रत्यय– ऊण, ऊणं–

तं जहा – चिंतिदूण, पढिदूणं।

(3) सा पाच्चंति बाला अत्थि। – वह नाचती हुई बाला है।

विधिकृदंत–अव्वं –

तं जहा – हसिदव्वं – हसने योग्य।

(4) तुमं पढिउं उदयपुर आगच्छंति – तू पढ़ने के लिए उदयपुर आते हो।

हेत्वर्थ कृदन्त – उं
पढिडं – पढने के लिए।
यहाँ पढंतो (पढ़ता हुआ) चिंतिदूण (स्मरण करके)
णच्चंति (नाचती हुई) पढिउं (पढने के लिए)
अपूर्ण क्रियाओं के पश्चात् वाक्य पूरा हुआ है।

कृदंत प्रकरण

वर्तमानकालिक कृदंत	न्त, माण
सम्बन्ध कृदंत	ऊण
हेत्वर्थ कृदंत	तु झ उ
विधि कृदंत	अव्व

वर्तमानकालिक कृदंत – न्त माण प्रत्यय (होता हुआ हुए) के तीनों लिंगों में प्रयुक्त होंगे और इनके सभी विभक्तियों में रूप चलेंगे।

– न्त – भण + न्त + ओ = भणंतो
बालो भणंतो गच्छइ
बालक कहता हुआ जाता है।

– माण – हस + माण + ओ = हसमाणो – हंसता हुआ, हसमाणो बालो सोहइ = हँसता हुआ बालक अच्छा लगता है।

एकवचन एवं बहुवचन तथा सातों विभक्तियों में न्त, माण प्रत्यय लगने पर पुं. अकारांत बाल, स्त्रीलिंग आकारांत माला एवं अकारांत नपुंसकलिंग 'जल' आदि की तरह रूप चलेंगे।

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	हसंतो	हसंता
द्वितीया	हसंत	हसंता, हसंते

सम्बन्ध कृदंत – ऊण – करके
यथा पढ + ऊण = पढिऊण = पढ़कर
बालो पढिऊण आगच्छइद।

हेत्वर्थ कृदंत – तुं झ उं = के लिए
पढ + उं = पढिउं = पढ़ने के लिए
बालो पढिउं गच्छइ।

विधि कृदंत – अव्व – योग्य, चाहिए
पढ + अव्व = पढिअव्व – पढिअव्वं
पोत्थअं पढिअव्वं अत्थि = पुस्तक पढ़ने योग्य है।
पढ + अणीअ = पढणीअं = पोत्थअं पढणीअं अत्थि।

पहचानिए और कृदंत नाम बतलाइए –

– णच्चंता सेवमाणो जयउं चिंतअव्वं।
– कृदंत बनाएं।
– वर्तमान कृदंत का प्रयोग कीजिए।
– विधि कृदंत का अव्वं किसी क्रिया में प्रयोग कीजिए।
– सम्बन्ध कृदंत का ऊण प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए।

विशेषण ज्ञान – ऐसे प्रयोग जिनसे संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता प्रकट हो।

– **अ का प्रयोग** – इस अ प्रत्यय के जुड़ने से शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि होती है।
अ झ आ　　इ झ ई　　इ ई झ ए　　उ ऊ झ ओ
राहवो – रहुस्स पुत्रो – रघु का पुत्र।
णाहेय – णाहिस्स पुत्रो। पंडवो – पंडुस्स पुत्रो।

वसुदेवस्स पुत्रो – वासुदेवो।

– त – गुरु + त = गुरुत। लहु + त = लहुत (लघुता)

– तण – सिसु + तण = सिसुतण (शिशुता)

सुह + तण = सुहतण (शुभता)

– इल्ल – बाला या युक्त अर्थ में इल्ल प्रत्यय होता है। यथा– जस + इल्ल = जसिल्ल (यशस्वान्),

बुद्धिल्ल – बुद्धि+इल्ल (बुद्धिमान)

विज्जिल्ल – विश्ना+इल्ल (विद्यावान)

गुण+इल्ल – गुणिल्ल – (गुणवान्)।

पहचानिए और बतलाइए –

– महुरिल्ल कासवो जसत सुहत समतण

कर्मणि प्रयोग ज्ञान –

वाच्य–परिवर्तन के तीन भेद हैं –

(प) **कर्तृवाच्य –** जिसमें कर्त्ता के पुरुष एवं वचन के अनुसार क्रिया का पुरुष और वचन होता है। यथा – वीरो गच्छइ।

– वीरो – प्रथमा एकवचन और गच्छइ – प्रथम पुरुष एकवचन की है।

(पप) **कर्मवाच्य –** कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया के पुरुष एवं वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुकूल होते हैं, वहां कर्मवाच्य होता है। यथा – महावीरेणं समोधम्मो णिछिहो।

(पपप)**भाववाच्य –** जहां क्रिया के अर्थ में प्रत्यय होता है, वहां भाववाच्य होता है। यथा –

छतो हसइ (कर्तृवाच्य)

कर्मवाच्य क्रियाएँ

कर/कुण – करना – करइ/कुणइ – कुणए

गच्छ –जाना – गच्छइ – गच्छए

पिव –पीना – पिवइ – पिवए

मुंच –छोड़ना – मुंचइ – मुंचए

पच –पचाना – पचइ – पचए

कील –खेलना – कीलइ – कीलए

पस्स –देखना – पस्सइ – पस्सए

जाण –जानना – जाणइ – जाणए

छतेण हसिज्जइ (कर्मवाच्य)

भाववाच्य क्रियाएँ

जण – पैदा होना – जणए

णच्च – नाचना – णच्चए

वस –रहना – वसए

सय –सोना – सयए

चिट्ठ –बैठना – चिट्ठए

भय –डरना – भयए

हव/हो – होना – हवइ – हवए

मर – मरना – मरए

अभ्यास

कृदंत – वर्तमान कृदंत

पुंलिंग – न्त, माण – पास+त – पासंतो।

पास+माण+ओ – पासमाणो।

चिंत+न्त – चिंतंतो। चिंत+माण – चिंतमाणो।
जय+न्त – जयंतो। जय+माण – जयमाणा
सीख+न्त – सीखंतो। सीख+माण – सीखमाणो।

स्त्री. – दह+न्त+आ – दहंता। दहमाण+आ – दहमाणा।
कड्ड+न्त+आ – कड्डंता। कड्ड+माण+आ – कड्डमाणा।
छिन्न+न्त+आ – छिन्नंता। छिन्न+माण+आ – छिन्नमाणा।
सोह+न्त+आ – सोहंता। सोह+माण+आ – सोहमाणा।

नपुं. – चल+न्त+(–) चलंतं। चल+माण+(–) – चलमाणं।
पड+न्त+(–) पडंतं। पड+माण+(–) – पडमाणं।
धाव+न्त+(–) धावंतं। धाव+माण+(–) – धावमाणं।
भम+न्त+(–) भमंतं। भम+माण+(–) – भममाणं।

सम्बन्ध कृदंत – ऊण – करके

(1) दह + ऊण = दहिऊण – जलाकर।
(2) णम + ऊण = णमिऊण – नमनकर।
(3) पेस + ऊण = पेसिऊण – भेजकर।
(4) सेव + ऊण = सेविऊण – सेवन करना।

हेत्वर्थ कृदंत – उं

(1) चल + उं = चलिउं = चलने के लिए।
(2) कंद + उं = कंदिउं = रोने के लिए, चिल्लाने के लिए।
(3) पड + उं = पडिउं = गिरने के लिए।
(4) पास + उं = पासिउं = देखने के लिए।

विधि कृदंत – अव्वं

(1) भणि + अव्वं = भणिअव्वं = कहने योग्य।
(2) सुणि + अव्वं = सुणिअव्वं = सुनने योग्य।
(3) चल + अव्वं = चलिअव्वं = चलने योग्य।

(4) गज्ज + अव्वं = गज्जिअव्वं = गरजने योग्य।

'अ' प्रत्यय

(1) 'अ' प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल या समाप्ति कार्य के लिए किया जाता है।।
(2) इसमें कर्त्ता तृतीया में रखा जाता है। यथा – मए पोत्थआणि पढिआणि।
(3) यह विशेष्य के अनुसार होता है। विशेष्य पुं., स्त्रीलिंग या नपुंसकलिंग हो तो उसी के अनुसार 'अ' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
(4) 'अ' प्रत्यय सदैव कर्मवाच्य में होता है।

पुंलिंग : गओ – गया। जयो – जीता। चिंत – चिंतिओ – सोचा गया। दह – दहिओ – जलाया गया। सेव + अ – सेविओ – सेवा किया गया। भण + अ – भणिओ = कहा गया।

स्त्रीं. : पेस+अ+आ – पेसिआ = भेजा ।
णच्च+अ+आ – णच्चिआ = नाचा।
लिह+अ+आ – लिहिआ = लिखा गया।

नपुं. : कील+अ+(–) कीलिअं – खेला गया।
पाल+अ+(–) पालिअं – पाला गया।
इच्छ+अ+(–) इच्छिअं – चाहा गया।

'अणीअ' प्रत्यय – चाहिए अर्थ में इसका प्रयोग होता है।
(1) इच्छ+अणीअ = इच्छणीअ = इच्छा करना चाहिए।
(2) कील+अणीअ = कीलणीअ = खेलना चाहिए।
(3) हस+अणीअ = हसणीअ = हसना चाहिए।
(4) पढ+अणीअ = पढणीअ = पढ़ना चाहिए।

'स्स' प्रत्यय – भविष्यत् काल में 'स्स' प्रत्यय होता है। इनमें न्त, माण, प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
(1) चिंत+स्स+न्त = चिंतिस्संतो = सोचता होगा।
(2) पढ़+स्स+न्त = पढिस्संतो = पढ़ता होगा।
(3) हस+स्स+माण = हसिस्समाणो = हसता होगा।
(4) णच्च+स्स+माण = णच्चिस्समाणो = नाचता होगा।

कर्मणि प्रयोग –
(1) धातुओं में मुख्यतः तीन वाच्य होते हैं – कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।
(2) भाववाच्य और कर्मवाच्य में मूल क्रियाओं के मध्य में 'इज्ज' प्रत्यय ईअ/ईअ विकरण भी जुड़ते हैं। यथा – हस+इज्ज+इ = हसिज्जइ। हस+ईअ+इ = हसीअइ।

क. वर्तमानकाल (लट् लकार)

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
बालो पोत्थअं पढइ।	बालेण पोत्थअं पढिज्जइ।
सुरेसो णयरं गच्छइ।	सुरेसेण णयरं गच्छिज्जइ।
चंदणा महावीरं पस्सइ।	चंदणाए महावीरो पस्सिज्जइ।

ख. भविष्यत्काल (लृट् लकार)

बालो पोत्थअं पढिस्सइ।
बालेण पोत्थअं पढिस्सइ।
सुरेसो णयरं गच्छिस्सइ।
सुरेसेण णयरं गच्छिस्सइ।
चंदणा महावीरं पस्सिस्सइ।
चंदणाए महावीरो पस्सिस्सइ।

ग. विधि/आज्ञा

बालो पोत्थअं पढउ।
बालेण पोत्थअं पढिज्जउ।
सुरेसो णयरं गच्छउ।
सुरेसेण णयरं गच्छिज्जउ।
चंदणा महावीरं पस्सउ।
चंदणाए महावीरो पस्सिज्जउ।

घ. भूतकाल

बालो पोत्थअं पढीअ।
बालेण पोत्थअं पढिज्जीअ।
सुरेसो णयरं गच्छीअ।
सुरेसेण णयरं गच्छिज्जीअ।
चंदणा महावीरं पस्सीअ।
चंदणाए महावीरो पस्सिज्जीअ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य

क. वर्तमान काल

कर्तृवाच्य **कर्मवाच्य**

बालो हसइ	बालेण हरिज्जइ।
सुरेसो हसइ	सुरेसेण हसिज्जइ।
चंदणा हसइ	चंदणाए हरिज्जइ।

ख. भविष्यत् काल

बालो हसिस्सइ	बालेण हसिस्सइ।
सुरेसो हसिस्सइ	सुरेसेण हसिस्सइ।
चंदणा हसिस्सइ	चंदणाए हसिस्सइ।

ग. विधि/आज्ञा

बालो हसउ	बालेण हसउ।
सुरेसो हसउ	सुरेसेण हसउ।
चंदणा हसउ	चंदणाए हसउ।

घ. भूतकाल

बालो हसीअ	बालेण हसिज्जीअ।
सुरेसो हसीअ	सुरेसेण हसिज्जीअ।
चंदणा हसीअ	चंदणा हसिज्जीअ।

संकेत – उक्त नियम एकवचन के हैं। इन्हें बहुवचन भी बनाया जा सकता है।

अभ्यास

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) चिंतइ किस काल का रूप है ? ( )
(2) चिंतित्था किस काल का रूप है ? ( )
(3) पासीअ का काल बतलाइए। ( )
(4) दहिस्सामि का काल बतलाइए। ( )
(5) उड्डंति का पुरुष बतलाइए। ( )
(6) धावसि का पुरुष बतलाइए। ( )

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) इसमें मध्यम पुरुष एकवचन कौनसा रूप है ?
(1) भणंति (2) भणसि
(3) कीणइ (4) पालामि ( )

(ख) इसमें भविष्यत्काल का रूप कौन सा है ?
(1) गच्छि (2) हसउ
(3) सेविस्सइ (4) णमंति ( )

(ग) विधि/आज्ञा इनमें से कौन हैं ?
(1) सोहइ (2) चलंति
(3) पेससि (4) णच्चउ ( )

(घ) इसमें भूतकाल का कौनसा रूप है ?
(1) कंदीअ (2) सीखउ
(3) छिन्नइ (4) पडिस्सामि ( )

वस्तुनिष्ठ की उत्तरमाला –

(क)–(2), (ख) – (3), (ग) – (4), (घ) – (1)।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) वर्तमान काल के रूप किसी एक धातु के लिखिए।
(2) भविष्यत् काल के मध्यम पुरुष के रूप किसी एक धातु के लिखिए।

(3) वर्तमानकाल के कृदन्त के प्रत्यय देकर पुंलिंग का प्रयोग दीजिए।
(4) विधि कृदंत का प्रत्यय लिखकर 'चल' में प्रयोग कीजिए।
(5) कर्तृवाच्य किसे कहते हैं ?
(6) कर्मवाच्य किसे कहते हैं ?
(7) भाववाच्य किसे कहते हैं ?
(8) संधि किसे कहते हैं ?

निम्न क्रियाओं के जोड़े बनाइए –

1. हसिस्सइ	1. वर्तमान काल
2. लिहउ	2. भूतकाल
3. गच्छीअ	3. भविष्यत्काल
4. भणइ	4. विधि

उत्तरमाला – (1) –3 (2) – 4 (3) – 2 (4) –1